EDUCATIONAL IDEAS OF AUROBINDO GHOSH 2nd Y

श्री अरविन्दों घोष का शैक्षणिक विचार

LIFE SKETCH:-

श्री अरविन्द घोष का जन्म 1872 ई0 में कलकत्ता में हुआ था। जिस परिवार में श्री अरविन्दों का जन्म हुआ वहाँ पुर्व से ही शिक्षा के विद्वान से पूर्ण था तथा शिक्षा की महत्व से पूर्ण परिचित था। यही कारण है की मात्र 6 छः वर्ष का आयु में ही इन्हें पढाई के लिए इंग्लैण्ड भेज दिया। जहाँ उन्होंने 14 वर्ष तक विशुद्ध पाश्चात्य पढ़ाई की। वहाँ की संस्कृति, लेखक एवं रचनाकारों की रचनाओं को पढ़ने के लिए ग्रीक, लैटीन, फ्रेंच, जर्मन आदि भाषा का अध्ययन किया।

1890 ई0 में श्री घोष भारतीय सिविल सेवा में उत्तीर्ण हुएँ परन्तु घुड़सवारी न आने के कारण वे निकाल दिये गये। 1893 ई0 में वे भारत आ गये। भारत आने के बाद 13 वर्षों तक बड़ौदा के गायकवाड़ के यहाँ नौकरी की। इस बीच उन्होंने संस्कृत एवं अन्य भाषा का भी अध्ययन किया। 1905 ई0 में 'बंग–भंग आन्दोलन के कारण उन्होंने नौकरी छोड़ दी और राजनीति में प्रवेश कर गऐ। उन्होंने अपनी रचनाओं को साप्ताहिक पत्रिका कर्मयोगिनी, धर्म आदि में प्रकाशित कर लोगों के बीच राष्ट्रीयता की भावना को जागृत किया। इस क्रम में वे कई बार जेल भी गऐ। एक बार अलीपुर जेल में उन्हें ईश्वरीय–आत्मा का दर्शन हुआ। उसके बाद राजनीति त्याग कर 1910 में वे Pandichery चले गये, वहाँ उन्होंने अरविन्द आश्रम की स्थापना की जो आज भी विश्वविख्यात है। जहाँ वे आध्यात्मिक साधना, योग एवं ब्रहमचर्य का पालन कर जीवन बिताते थे।

और अंत में एक महान दार्शनिक, उच्च कोटि के शिक्षा शास्त्री, समाज सूधारक का निधन 1950 ई0 में हो गया।

PHILOSOPHICAL THOUGHT:-

श्री अरविन्द घोष आर्दशवादी होने के नाते एक उच्च कोटि के शिक्षा शास्त्री थे। वे विकास में विश्वास रखते थे। उनके अनुसार विकास का एक ही लक्ष्य था वो है अखण्ड चेतना की प्राप्ति। इस विकास के क्रम में एक समय ऐसा आता है जब मानस अति मानसिक स्तर को प्राप्त कर अतिमानस बन जाता है और फिर वह ज्ञान से अधिक ज्ञान और प्रकाश से अधिक प्रकाश की ओर बढ़ता हैं।

EDUCATIONAL IDEAS:-

श्री घोष उच्च कोटि के आदर्शवादी एवं शिक्षा शास्त्री थे। उनके दर्शन का आधार उपनिषद था। वे जीवन में आध्यात्मिक साधन योग एवं ब्रहमचर्य में विश्वास रखते थे। उन्होंने अपने जीवन बहुत सारी रचनाएँ की जिनको को साप्ताहिक कर्मयोगिनी में प्रकाशित करते थे।

श्री घोष के अनुसार शिक्षा के चार अन्तः करण होते हैं, मन, बुद्धि, चिंतन एवं ज्ञान। शिक्षा को बालक के चारों स्तर का विकास करके उसे अध्यात्म की ओर ले जाना हैं। श्री घोष ऐसी शिक्षा के समर्थक थे "जो बालक को स्वतंत्र वातावरण प्रस्तुत करके उसकी रुचियों के अनुसार उसका सर्वांगीण विकास करके उसका नैतिक, बौधिक, सामाजिक विकास का आध्यात्मिक विकास में सहायता करें। उन्होंने स्वंय लिखा" सच्ची व वास्तविक शिक्षा वह है जो बालक का सार्वांगीण विकास करके उसे आध्यात्मिक विकास में सहायता प्रदान करे।

CONCEPT OF EDUCATION:-

श्री अरविन्द के अनुसार शिक्षा का अर्थ वह है जो बालक को कर्मठ नागरिक बनाये एवं समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने में समर्थ हो।

"शिक्षा को मशीन से बना हुआ सूत नहीं समझना चाहिए बल्कि उसे मस्तिष्क की शक्ति एवं आत्मा का जीवन उत्कर्ष करना चाहिए।

PRINCIPLES OF EDUCATIONAL PHILOSOPHY:-

1. शिक्षा मातृभाषा में होनी चाहिए।
2. शिक्षा बालक प्रधान होनी चाहिए।
3. शिक्षा मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों के अनुसार दिया जाना चाहिए।
4. शिक्षा को बालक के समस्त शक्तियों विकास का साधन होना चाहिए।
5. शिक्षा का आधार ब्रहमचर्य होना चाहिए।
6. शिक्षा द्वारा ज्ञानेन्द्रियों का प्रशिक्षण करना चाहिए।
7. शिक्षा में धर्म शामिल होना चाहिए नही तो भ्रष्टाचार फैले गा।

AIMS OF EDUCATION:-

श्री घोष के अनुसार उद्देश्यहीन शिक्षा किसी काम की नही शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य होने चाहिए।

1. शारीरिक पूर्णता एवं शारीरिक शुद्धि ।
2. मानसिक विकास जैसे, चिंतन, तर्क कल्पना शक्ति, सांवेगिकस्थिरता आदि का

विकास।

3. ज्ञानेन्द्रियों का विकास या प्रशिक्षण।

4. अन्तः करण का विकास।

5. नैतिकता का विकास।

6. आध्यात्मिकता का विकास।

CURRICULUM:-

पाठयक्रम के निर्धारण के निम्नलिखित सिद्धांत होने चाहिए।

1. पाठयक्रम रोचक हो।

2. पाठयक्रम में उन सभी विषयों के शामिल करना चाहिए जिसमें बौद्धिक एवं सामाजिक विकास हो।

3. पाठयक्रम में बच्चों को आकर्षित करने की शक्ति हो।

4. पाठयक्र मातृभाषा में हो।

5. पाठयक्रम विभिन्न स्तरों की शिक्षा के लिए अलग अलग स्तर के होने चाहिए।

PRIMARY LEVEL:-

मातृभाषा, गणित, अंग्रेजी, सामाज अध्ययन, विज्ञान चित्रकला, संगीत, आदि।

SECONDARY LEVEL:-

मातृभाषा, गणित, फ्रेंच, अंग्रेजी, शरीर विज्ञान, भौतिकी, रसायन, चित्रकला, संगीत, आदि।

HIGHER LEVEL:-

सभ्यता का इतिहास, अंग्रेज़ी, साहित्य, फ्रेंच साहित्य, अन्तरराष्ट्रीय संबंध, आदि।

VOCATIONAL LEVEL:-

चित्रकला, वागवानी, सिलाई कढ़ाई, भारतीय, पाश्चा त्य संगीत, कृषि, मेडिकल, इजीनियारिंग आदि।

METHOD OF TEACHING (

वे Learning by do ing method, क्रमिकविधि, Observation method. आदि को शिक्षण की उपयोगी विधि के रुप में स्वीकार करते थे।

PLACE OF TEACHER:-

श्री अरविन्द घोष ने शिक्षक का स्थान गौण रखा है। शिक्षक केवल सहायक एवं

पथ–प्रदर्शक के सामन है। उनका कार्य ज्ञान थोपना नही केवल बताना हैं। की उस ज्ञान को कहाँ से और कैसे प्राप्त करना हैं। इस प्रकार शिक्षक बालक को समस्या का हल नहीं बताता है बल्कि उसका समाधान किस प्रकार करना है यह सिखाता हैं।

PLACE OF PEOPLE:-

श्री घोष ने स्वतंत्र वातावरण का समर्थन किया है जिसमें छात्रों के रुचि के अनुसार पाठयक्रम में विषय शामिल हो। इस प्रकार बालक स्थान शिक्षा में प्रमुख्य हैं।

EVALUTION:-

श्री घोष लिखित परीक्षा के बजाए मौखिक परीक्षा पर वल देते थे। वे परीक्षा द्वारा बालक की क्रियाशीलन एवं ज्ञानेन्द्रियों के विकास के कार्य पर आधिक ध्यान देते थे। श्री घोष पूरे वर्ष चलने वाली शिक्षक द्वारा किए गऐ मूल्यांकन को सबसे उचित मानते थे।